कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



खिलाफत आंदोलन

- भले ही रॉलट सत्याग्रह एक बहुत बड़ा आंदोलन था लेकिन अभी भी वह मुख्य रूप से शहरों और क़स्बों तक ही सीमित था।
- महात्मा गांधी पूरे भारत में और भी ज़्यादा जनाधार वाला आंदोलन खड़ा करना चाहते थे।
- लेकिन उनका मानना था कि हिंदू-मुसलमानों को एक-दूसरे के नज़दीक लाए बिना ऐसा कोई आंदोलन नहीं चलाया जा सकता।
- उन्हें लगता था कि ख़िलाफ़त का मुद्दा उठाकर वे दोनों समुदायों को नज़दीक ला सकते हैं।
- प्रथम विश्वयुद्ध में ऑटोमन-तुर्की की हार हो चुकी थी।
- यह अफ़वाहें फैली हुई थीं कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (ख़लीफ़ा) ऑटोमन सम्राट पर एक बहुत सख्त शांति संधि थोपी जाएगी।
- ख़लीफ़ा की शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में बंबई में एक ख़िलाफ़त समिति का गठन किया गया था।
- मोहम्मद अली और शौकत अली बंधुओं के साथ-साथ कई मुस्लिम नेताओं ने इस मुद्दे पर संयुक्त जनकार्यवाही की संभावना तलाशने के लिए महात्मा गांधी के साथ चर्चा शुरू कर दी थी।
- सितंबर 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महात्मा गांधी ने दूसरे नेताओं को इस बात पर राज़ी कर लिया कि ख़िलाफ़त आंदोलन तथा स्वराज दोनों के लिए एक असहयोग आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए।

असहयोग ही क्यों?

- गांधी जी ने असहयोग आंदोलन का रास्ता क्यों चुना?
- अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज (1909) में गांधी जी ने कहा था कि – भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था तथा यह शासन इसी सहयोग से चल रहा था। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर ही ब्रिटिश शासन ढह जायेगा और स्वराज की स्थापना हो जायेगी।
- गांधी जी का सुझाव था कि आंदोलन चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए।

प्रथम चरण :-

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- लोगों को सरकार द्वारा दी गई पदवियाँ लौटा देनी चाहिए।
- सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विधायी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।

दूसरा चरण :-

- यदि सरकार दमन का रास्ता अपनाती हैं तो व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन भी शुरू किया जाये।
- 1920 की गर्मियों में गांधी जी और शौकत अली आंदोलन के लिए समर्थन जुटाते हुए देश भर में यात्राऐं करते रहे।
- कांग्रेस के बहुत सारे लोग प्रथम चरण में लिये गये असहयोग के प्रस्तावों से सशंकित थे।
- वे नवम्बर 1920 में विधायी परिषद के लिए होने वाले चुनावों का बहिष्कार करने से हिचकिचा रहे थे।
- उन्हें यह भी डर था कि इस आंदोलन में लोग हिंसा कर सकते हैं।
- सितम्बर से दिसम्बर तक कांग्रेस में भारी खींचतान चलती रही।
- कुछ समय तक ऐसा लगा कि आंदोलन के समर्थकों और विरोधियों के बीच सहमति नहीं बन पायेगी।
- आखिरकार दिसम्बर - 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में एक समझौता हुआ और असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गयी।

आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराऐं :-

- असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी 1921 में शुरू हुआ।
- इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने भाग लिया क्योंकि हरेक की अपनी-अपनी आकांक्षाऐं थी।
- सभी के लिए स्वराज के अर्थ भी अलग अलग थे।

शहरों में आंदोलन :-

- आंदोलन की शुरूआत शहरी मध्यवर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई।
- हजारों विद्यार्थियों में स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये।
- हैडमास्टरों और शिक्षकों ने इस्तीफे सौंप दिये।
- वकीलों ने मुकदमें लड़ना बंद कर दिया।
- मद्रास के अलावा ज्यादातर प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया।
- मद्रास में गैर ब्राह्मणों द्वारा बनाई गई जस्टिस पार्टी का मानना था कि काउंसिल में प्रवेश के जरिए उन्हें वे अधिकार मिल सकते हैं जो सामान्य रूप से केवल ब्राह्मणों को मिल पाते हैं, इसलिए इस पार्टी ने चुनावों का बहिष्कार नहीं किया।
- आर्थिक मोर्चे पर असहयोग का असर और भी ज्यादा नाटकीय रहा।

1. विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया।
2. शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई।

पिकेटिंग :- विरोध करते हुए दफ्तर व दुकानों में अंदर जाने का रास्ता रोक लेते हैं।

3. विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 1921–22 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था। जो 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गया।
- बहुत सारे व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने तथा विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इंकार कर दिया।
- बहिष्कार आंदोलन के फैलने से तथा भारतीय कपड़े पहनने से भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन भी बढ़ने लगा।

आंदोलन में कमी :-

- कुछ समय बाद शहरों में यह आंदोलन धीमा पड़ने लगा।
- ब्रिटेन की मिलों का कपड़ा यहां की खादी के कपड़े से सस्ता होता था। अत: गरीब खादी कैसे खरीदते? वे मिलों के कपडे का लम्बे समय तक बहिष्कार कैसे करते?
- ब्रिटिश संस्थानों (स्कूल, कॉलेज, कोर्ट) के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गयी।
- आंदोलन तब कामयाब होता जब ब्रिटिश संस्थानों के वैकल्पिक भारतीय संस्थान की पहले ही स्थापना की जाती।
- लेकिन वैकल्पिक संस्थानों के स्थापना की प्रक्रिया बहुत धीमी थी।
- फलस्वरूप विद्यार्थी और शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे और वकील दोबारा सरकारी अदालतों में दिखाई देने लगे।

ग्रामीण इलाकों में विद्रोह :-

- शहरों से बढ़कर असहयोग आंदोलन देहात में भी फैल गया था।
- देश के विभिन्न भागों में चले किसानों और आदिवासियों के संघर्ष भी इस आंदोलन में समा गये।

अवध में बाबा रामचन्द्र :-

- अवध में सन्यासी बाबा रामचंद्र किसानों का नेतृत्व कर रहे थे।
- बाबा रामचन्द्र इससे पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर काम कर चुके थे।
- उनका आंदोलन तालुकदारों और जमींदारों के खिलाफ था जो किसानों से भारी-भरकम लगान और तरह-तरह के कर वसूल कर रहे थे।
- किसानों को बेगार करनी पड़ती थी।
- जमीनों पर उनका अधिकार स्थापित न हो सके इसलिए बार-बार उनकी जमीनों के पट्टे बदल दिए जाते थे।
- किसानों की मांग थी कि-

(i) लगान कम किया जाए,
(ii) बेगार खत्म हो तथा
(iii) दमनकारी जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाये।

- इसके तहत बहुत सारे स्थानों पर जमींदारों को नाई-धोबी की सुविधाओं से भी वंचित करने के लिए पंचायतों ने फैसला किया।
- जून 1920 में जवाहर लाल नेहरू ने अवध के गांवों का दौरा किया तथा गांव वालों से बातचीत की

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

और उनकी व्यथा समझने का प्रयास किया।

- अक्टूबर 1920 तक जवाहर लाल नेहरू, बाबा रामचन्द्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में किसान सभा का गठन कर लिया गया।
- महीने भर में इस पूरे इलाके के गांवों में संगठन की 300 से ज्यादा शाखाऐं बन चुकी थीं।
- अगले साल जब असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तो कांग्रेस ने अवध के किसान संघर्ष को इस आंदोलन में शामिल करने का प्रयास किया।
- लेकिन किसानों के आंदोलन में ऐसे स्वरूप विकसित हो चुके थे जिनसे कांग्रेस नेतृत्व खुश नहीं था।
- 1921 में जब आंदोलन फैला तो तालुकदारों और व्यापारियों के मकानों पर हमले होने लगे, बाजारों में लूटपाट होने लगी और अनाज के गोदामों पर कब्जा कर लिया गया।
- बहुत सारे स्थानों पर स्थानीय नेता किसानों को समझा रहे थे कि गांधी जी ने ऐलान कर दिया है कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और जमीन गरीबों में बांट दी जायेगी।
- महात्मा का नाम लेकर लोग अपनी सारी कार्रवाइयों को सही ठहरा रहे थे।

आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों में आंदोलन:-

- 1920 के दशक में आंध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों के आदिवासी किसानों ने एक उग्र गुरिल्ला आंदोलन छेड़ दिया।
- कांग्रेस इस तरह के संघर्ष को कभी स्वीकार नहीं कर सकती थी।
- अन्य वन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी अंग्रेजी सरकार ने जंगलों में लोगों को दाखिल होने पर पाबंदी लगा रखी थी।
- लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे और न ही जलाने के लिए लकड़ी तथा फल बीन सकते थे।
- इससे पहाड़ों के लोग परेशान और गुस्सा थे।
- न केवल उनकी रोजी-रोटी पर असर पड़ रहा था बल्कि उनके परंपरागत अधिकार भी छीने जा रहे थे।
- जब सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो लोगों ने बगावत कर दी।
- इनका नेतृत्व करने वाले अल्लूरी सीताराम राजू एक दिलचस्प व्यक्ति थे।
- उनका दावा था कि उनके पास बहुत सारी विशेष शक्तियां हैं –

(i) वह सटीक खगोलीय अनुमान लगा सकते हैं।

(ii) लोगों को स्वस्थ कर सकते हैं तथा गोलियां भी उन्हें नहीं मार सकतीं।

- राजू के व्यक्तित्व से चमत्कृत लोगों को लगता था कि वह ईश्वर का अवतार है।
- राजू महात्मा गांधी की महानता के गुण गाते थे।
- उनका कहना था कि वे असहयोग आंदोलन से प्रेरित हैं।
- उन्होंने लोगों को खादी पहनने तथा शराब छोड़ने के लिए प्रेरित किया।
- उनका यह भी दावा था कि भारत अहिंसा के बल पर नहीं बल्कि केवल बल प्रयोग के जरिये ही

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

आजाद हो सकता है।

- गूडेम विद्रोहियों ने पुलिस थानों पर हमले किये, ब्रिटिश अधिकारियों को मारने की कोशिश की और स्वराज प्राप्ति के लिए गुरिल्ला युद्ध चलाते रहे।
- 1924 में राजू को फांसी दे दी गई। राजू अपने लोगों के बीच लोकनायक बन चुके थे।

बागानों में स्वराज :-

- असम के बागानी मजदूरों के लिए आजादी का मतलब यह था कि उस चारदीवारी के बाहर जा सके जिसमें उनको बंद करके रखा गया था।
- उनके लिए आजादी का मतलब यह भी था कि वे अपने गांवों से संपर्क रख सकें।
- इसका कारण यह था कि 1859 के ''इनलैण्ड इमिग्रेशन एक्ट'' के तहत उन्हें बागान से बाहर जाने की छूट नहीं थी।
- जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो अपने अधिकारियों की अवहेलना कर बागान छोड़ घर जाने लगे।
- उनको लगता है अब गांधी राज आ गया है इसलिए हरेक को गांव में जमीन मिल जायेगी।
- लेकिन वे अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच पाये और रेल्वे व स्टीमरों की हड़ताल के कारण रास्ते में ही फंस गये तथा पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई हुई।
- इस प्रकार से असहयोग आंदोलन एक इलाके तक ही सीमित न रहकर सभी जगह फैल गया।
- अन्ततः 1922 में गोरखपुर में चौरी-चौरा में बाजार से गुजर रहे शांतिपूर्ण जुलूस तथा पुलिस के बीच हिंसक टकराव होने के कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को रोकने का आह्वान किया।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here